

श्रीमती (प्रो.) वीणा टण्डन

Smt. (Prof.) Veena Tandon



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्रीमती (प्रो.) वीणा टण्डन

श्रीमती (प्रो.) वीणा टण्डन विस्तृत रूप से जानी मानी अध्यापिका और एक महिला वैज्ञानिक हैं। आपने पैंतीस वर्षों से अधिक समय तक पूर्वोत्तर भारत के लोगों की लब्धप्रतिष्ठ सेवा की है।

2. आपका जन्म 07 सितम्बर,1949 को काशीपुर (उत्तराखंड) में हुआ। आपने अपनी बी.एससी. की डिग्री 1967 में, एम.एससी. डिग्री 1968 में और पीएच.डी की डिग्री 1973 में पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से प्राप्त कीं। 1974 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से अपना शैक्षणिक जीवन प्रारम्भ कर आपने 1980 से 2014 में अपनी सेवानिवृत्ति होने तक, नॉर्थ–इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय) में जीवनविज्ञान के फेकल्टी के रूप में कार्य किया। केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, इरविन, यूएसए से पोस्ट–डॉक्टरल रिसर्च स्पेशलिस्ट (1978–79) के तौर पर आपने डीएनए के स्तर पर अल्कॉहल की आदत का मस्तिष्क और यकृत के तन्तुओं पर प्रभाव विषय का अध्ययन किया।

3. आपने पेरासिटोलॉजी के क्षेत्र में, विशेष तौर पर उसे कृमि संक्रमणों का संकेत देने वाले स्वास्थ्य और स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र से जोड़ते हुए, अत्यन्त प्रभावशाली योगदान दिया है। विशेष तौर पर, पूर्वोत्तर भारत में, विशेष रूप से यकृत, फेफड़े और आंत के ये संक्रमण मानव स्वास्थ्य के लिए एक बहुत बड़ा खतरा हैं।

4. आपके इस अनुसंधान से समाज पर एक दूरगामी प्रभाव पडा है। आपने उन अनेकों रोगनाशक पौधों की प्रभाविता की गहनता से जांच की है जिन्हें जनजातीय परम्परागत चिकित्सा पद्धति में कृमि संक्रमणों के इलाज के लिए उपयोग में लाया जाता है। आपने ऐसे पौधों पर आधारित बचावों की उस कृमिनाश/ कृमि निस्सारक क्षमता को वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित किया है जो कि सामाजिक–आर्थिक रूप से शोषित और ग्रामीण समाजों को वहन करने योग्य स्वास्थ्य देखभाल के चिकित्सा संबंधी बहुमूल्य विकल्प दे सकते हैं। कृमि परजीवियों के संबंध में आपके द्वारा किए गए अध्ययनों से प्रामाणिक आणविक चिह्नकों और मेडिको–डायग्नोस्टिक वैल्यू के डीएनए बार कोड्स के विकास को बढ़ावा मिला है। आपने पूर्वोत्तर भारत में रक्त–जनित परजीवी रोगों के कारणवाचक एजेंटों का तथा दक्षिण भारत में आंखों के उभर रहे नए रोग, ग्रेन्यूलोमाट्स यूविटीज के एक नोवल (वॉर्म) इटिओलॉजिकल एजेंट की भी पहचान की है। आप कृमि से उत्पन्न हाने वाले अपेक्षित उष्णकटिबन्धी रोगों के बारे में राष्ट्रीय और विश्व व्यापी अनुसंधान संबंधी चुनौतियों से निबटने में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।

5. आप भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एनएएसआई), भारतीय पैरासिटोलॉजी सोसाइटी, भारतीय प्राणीविज्ञान सोसाइटी और भारतीय कृमिविज्ञान सोसाइटी के फैलो हैं। आपने अनेकों शैक्षिक निकायों और कार्य बलों में बड़े पैमाने पर सदस्य के तौर पर सेवा की है जिनमें मंत्रिमंडल (भारत सरकार) की वैज्ञानिक सलाहकार समिति और विश्व पैरासिटोलॉजिस्ट फेडरेशन की कार्यकारी परिषद शामिल हैं। आपने लगभग दो दशकों तक पूर्वोत्तर क्षेत्र के दूर–दराज के क्षेत्रों में कम सुविधा प्राप्त अथवा सुविधाओं से वंचित शिक्षा के केन्द्रों के स्कूली बच्चों के लिए भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एनएएसआई) के विज्ञान जागरूकता और लोकप्रियता कार्यक्रम चलाने के लिए अनवरत रूप से प्रयास किए हैं। आपने 175 से भी अधिक रिसर्च पेपर्स प्रकाशित किए हैं, पैरासिटोलॉजी संदर्भ पुस्तकों में अनेकों अध्यायों का योगदान किया है, आपने दो पुस्तकें लिखी हैं और 3 पुस्तकों को सम्पादित किया है जो विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं और इस क्षेत्र के पेशेवरों के लिए बहुत ही लाभप्रद हैं। आपने अपने चालीस वर्ष के लम्बे अनुसंधान के कैरियर में अपने विषय में बड़ी संख्या में एस.एस.सी और 28 से अधिक पीएच.डी. के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया है और पूर्वोत्तर भारत में पैरासिटोलॉजी अनुसंधान का एक मजबूत स्कूल स्थापित किया है।

6. आपने अनेकों प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं जिनमें नेशनल मैरिट स्कॉलरशिप, एनिमल टैक्सोनॉमी में ई.के. जानकी अम्मल पुरस्कार (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय), प्रोफेसर अर्चना शर्मा मेमोरियल (एनएएसआई) लैक्चर पुरस्कार, और भारतीय पैरासिटोलॉजी सोसाइटी का लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार शामिल हैं।

Smt. (Prof.) Veena Tandon

Smt. (Prof.) Veena Tandon is a widely recognized teacher and a woman scientist who has rendered distinguished service to the people of Northeast India for more than thirty-five years.

2. Born on September 7, 1949 at Kashipur (Uttarakhand), Prof. Tandon received her B.Sc. (1967), M.Sc. (1968) and Ph.D. (1973) degrees from Panjab University, Chandigarh. Starting her academic career from Himachal Pradesh University in 1974, she worked as a faculty of Zoology at North-Eastern Hill University, Shillong (Meghalaya) since 1980 till her retirement in 2014. As post-doctoral Research Specialist (1978-1979) at University of California, Irvine, USA, she studied the effect of alcohol abuse at the DNA level on the brain and liver tissues.

3. Prof. Tandon has made seminal contributions to the field of Parasitology, especially linked to the area of health and hygiene implicating worm infections. In Northeast India, in particular, these infections, especially of the liver, lung and intestine, are a potential threat to human health.

4. Prof. Tandon's research has a far-reaching impact on society. She extensively investigated the efficacy of many medicinal plants, which are used in cure against worm infections in the tribal traditional medicine systems. She scientifically authenticated the vermicidal/vermifugal potential of such plant-based cures that can offer valuable therapeutic alternatives of affordable healthcare to socio-economically underprivileged and rural societies. Her genomic studies on worm parasites lead to the development of authentic molecular markers and DNA bar codes of medico-diagnostic value. She characterized the causative agents of blood-borne parasitic diseases in Northeast India and also a novel (worm) etiological agent of a newly emerging eye disease, granulomatous uveitis, in South India. She is actively engaged in addressing national and global research challenges on Neglected Tropical Diseases of worm origin.

5. Prof. Tandon is Fellow of The National Academy of Sciences India (NASI), Indian Society for Parasitology, Zoological Society of India, and Helminthological Society of India. She served as member of many academic bodies and Task Forces including the Scientific Advisory Committee to the Cabinet (Government of India) and member – at large on the Executive Council of World Federation of Parasitologists. For nearly two decades, she has relentlessly strived to take Science Awareness and Popularization Programmes of NASI for school children to less privileged or facility-deprived educational centers in remote and far-flung areas of the north-eastern region. She has published more than 175 research papers, contributed several chapters in Parasitology reference books, authored two and edited 3 books that are highly useful to students, researchers and professionals in the field. During her forty-year long research career, she trained a large number of M.Sc. and over 28 Ph.D. students in the subject and established a strong School of Parasitology Research in Northeast India.

6. Prof. Tandon is the recipient of many prestigious awards and recognitions, notably: National Merit Scholarship; E.K. Janaki Ammal Award in Animal Taxonomy (Ministry of Environment, Forests & Climate Change); Professor Archana Sharma Memorial (NASI) Lecture Award; and Lifetime Achievement Award of The Indian Society for Parasitology.